तृतीय अध्याय

रेवतीसरन शर्मा के नाटकों में चित्रित समस्याएँ

तृतीय अध्याय

" रेवतीसरन शर्मा के नाटकों में चित्रित समस्याएँ "

प्रस्तावना -

समस्या - अर्थ एवं उत्पत्ति

आज के युग को 'विज्ञान युग' कहा जाता है, लेकिन आज के युग को 'समस्या युग' कहना अधिक तर्क संगत होगा। इस विस्तृत विशाल मानव समूह को समस्या जैसे छोटे से शब्द ने बाँध रखा है। समस्या की पूर्ति के लिए पूरा मानव-समाज लगातार प्रयत्नशील है। समस्या का अस्तित्व बहुत ही पुरातन है। आदिम युग में मनुष्य के साथ ही समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। अगर समस्याएँ निर्माण न होती तो मानव जाती का विकास न होता। जब समस्या उभर आती है, तब आवश्यकता का ऐहसास होता है।

समस्या -शब्द -

संस्कृत भाषा के सम + अस । सम उपसर्ग + अस धातू के संयोग से ' समस्या' शब्द बन गया है। सम् का अर्थ है- एकत्र तथा अस् का अर्थ है- फेंकना या रखना अर्थातः समस्या शब्द का अर्थ है- एकत्र रखना या एकत्र फेंकना।

समस्या का स्वरूप और व्याप्ति -

पहले समस्या शब्द साहित्यिक क्षेत्र में संबंधित था। कवियों के लिए वह चुनौती थी। विषम परिस्थितियों से अद्भुत स्थिति के अर्थ में कालांतर में समस्या शब्द रूढ़ हो गया। 'समस्या' शब्द राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक सभी क्षेत्रों में अवहत होने लगा है। समस्या एक क्रिया मात्र नहीं वह एक प्रक्रिया होती है।

इसकी तीन अवस्थाएँ होती हैं। यह एक विचारों की प्रक्रिया होती है। जिस में संघर्ष की भावना होती है , जो मनुष्य को कुछ करने को प्रेरित करती है। जिससे मनुष्य का जीवन गतीशील रहता है-''समस्या एक प्रक्रिया है , द्वंद्वात्मक स्थिति है। हेगेल के द्वंद्वात्मक सिद्धातों के अनुसार एक विचार आता है, उसी विचार के अनुसार अवस्थाएँ पैदा होती हैं, फिर दूसरा विचार आता है, वह पहले विचार से टक्कर लेता है। फिर इन दोनों विचारों के टक्कर से तीसरा विचार उत्पन्न होता है। इस द्वद्वात्मक प्रक्रिया में जिस क्रम से हम तत्वबोधपर पहुँचते हैं, वे तीन सोपान है- वाद, प्रतिवाद, समवाद। इस अवतरण से यह स्पष्ट होता है कि समस्या एक क्रिया नहीं बल्कि प्रक्रिया है।''[1] इस मे तीन तत्व होते हैं। और तीसरे तत्व की उत्पत्ति ही 'समस्या' है।

3.1 सामाजिक समस्याएँ -

3.1.1 आर्थिक समस्या

3.1.2. भ्रष्टाचार की समस्या

3.1.3 नकाबी दुनिया की समस्या

3.1.4 निःस्वार्थी देशसेवकों की समस्या

3.1.5 बोगस अखबार की समस्या

3.2 पारिवारिक समस्याएँ -

3.2.1 असफल प्रेम की समस्या

3.2.2 प्रेम के खोखले आदर्श की समस्या

3.2.3 प्रेम -विवाह की समस्या

3.2.4. अनमेल विवाह की समस्या

3.2.5 अविवाह की समस्या

3.2.6 विधवा समस्या

3.2.7 अंधःविश्वास की समस्या

3.2.8 दांपत्य प्रेम की समस्या

3.1 सामाजिक समस्याएँ -

3.1.1 आर्थिक समस्या -

पूंजीवादी व्यवस्थाने आदमी को पंगु बना दिया है। दिन-ब-दिन बढ़नेवाली आबादी, बढ़ती औद्योगिकता बेकारी तथा बेरोजगारी आदि के कारण लोगों का जीवन जर्जर बन गया है। आज 'पैसा' ही सबकुछ बन गया है। 'पैसा' या 'धन' के लिए आदमी खून, चोरी, डकैती कुछ भी करने को तैयार होता है। आज व्यक्ति को पैसों के आधारपर तोला जाता है। समाज में जिनके पास अधिक धन है, उन्हें ही प्रतिष्ठा या सम्मान मिलता है। डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत लिखते हैं- "धन का अभाव मानव की समस्त आकांक्षाओं को ध्वस्त कर देता है। परंतु दूसरी ओर धन से जीवन सुखी ही नहीं अपितु समाज में प्रतिष्ठा भी मिलती है। आज का यह भौतिकवादी जीवनदर्शन मनुष्य को पैसे के 'मूल्य'से तोलता है।"[2]

आधुनिक युग में पैसा ही सबकुछ बन गया है। कमानेवाले अकेले व्यक्तिपर पूरा परिवार निर्भर होने के कारण उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परिणाम स्वरूप अर्थाभाव के कारण मनुष्य को गलत रास्ते अपनाने के लिए मजबूर किया जाता है। आज नारी भी इससे दूर नहीं है। वह भी पैसा कमाने के लिए रिश्वत, चोरी, डकैती, अनैतिक आचरण आदि को अपनाती हैं। महानगर में इसकी मात्रा अधिक दिखाई देती है। आज विवाहित नारी भी आर्थिक अभाव को दूर करने के लिए और आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए नौकरी करती है। डॉ. दिनेशचंद्र वर्मा लिखते हैं-"विवाहित नारियों को नौकरी करने के भी कई कारण होते हैं। और इन में सबसे बड़ा कारण है- आर्थिक अभाव। मँहगाई बढ़ी, व्यक्ति की आवश्यकताएँ बढ़ी हैं, जीवन स्तर ऊँचा करने की

स्पर्धा तीव्र हुई हैं। अब महानगरों में, परिवार में, मात्र पुरूष की आमदनी पर सारे शौक पूरे हो सके, वैसी स्थिति नहीं है। जरूरत और शौक दोनों कारण मूल है।''[3]

'चिराग़ की लौं' नाटक में 'आर्थिक समस्या' प्रभावी ढंग से दिखाई देती है। इस नाटक की नायिका तारा आर्थिक अभाव को दूर करने तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए नौकरी करना और रिश्वत लेना चाहती है, मगर उसका पति किशोर आदर्शवादी और ईमानदार होने के कारण उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकती। आर्थिक अभाव को दूर करने के लिए तारा गिरीश के ऑफ़िस में 500 सौ रूपयों के लिए नौकरी करने को तैयार होती है साथ ही किशोर ने सेठ भोगीलाल से जप्त किए महत्त्वपूर्ण कागजात और बहीरखाते 5000 रू रिश्वत लेकर गिरीश को देती है। जब यह बात किशोर को मालूम होती है तब किशोर अत्याधिक चिढ़ता है। उसे इस बात का दुःख होता है कि उसकी पत्नी ने रिश्वत लेकर उसकी ईमानदारी को कलंक लगाया है, उसके साथ धोखा किया है । जिसके प्यार के सहारे वह ज़िंदगी काट रहा था, अगर वो ही धोका दे तो इससे ज्यादा पीड़ादायक और क्या हो सकता है ? तारा को लगता है कि आर्थिक अभाव के कारण होनेवाले झगड़े अब खत्म होंगे । तारा रिश्वत लेकर अपने प्यार को बचाना चाहती है। जब किशोर उसपर क्रोधित होता है, तब तारा उसे कहती है - '' मैंने बस तुम्हारे लिए, अपने उस प्यार को बचाने की कोशिश की है, जिसे आए दिन की तंगी और वे झगड़े खत्म कर रहे थे, जिनकी तह में हमेशा रूपवे के रोने होते थे। अब वे झगड़े नहीं होंगे।''[4]

'न धर्म, न ईमान ' नाटक में भी आर्थिक समस्या दिखाई देती है। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण दया और उसके पिताजी दिनेश के घर में आश्रित है। दया गरीब होने के कारण नौकरानी की तरह उस घर का पूरा काम अकेली करती है। दिनेश और दया एक-दूसरे से प्यार करते हैं, और वे दोनों शादी करना चाहते हैं। मगर दादी इस विवाह को विरोध करती है, क्योंकि दादी दिनेश को अमीर और दया को गरीब मानती थी। दिनेश, दया को हासिल करने के लिए वह घर छोड़कर चला जाता है। जाते वक्त वह एक बार दया को मिलना चाहता है, इसीलिए दया को बाहर बुलाता है। उसी समय वहाँ दादी पहुँच जाती है। दया को दिनेश के पास देखकर वह अत्याधिक क्रोधित होती है और दया को घसीटते अंदर लेते हुए कहती है- ''नागिन ! मेरे ही घर में, मेरे ही अनाजपर पलकर, मेरे ही को डंक मारने चली है ! ''[5]

दादी, दया का विवाह अधेड़ उम्र के रामदयाल से करा देती है। मगर रामदयाल से शादी करके दया सुखी नहीं होती। शादी के बाद भी वह अंतर्मन से दिनेश को ही चाहती है। डॉ. दिनेशचंद्र वर्मा लिखते हैं- ''अर्थ को प्रधानता देने की इस प्रवृत्ति ने ही पारिवारिक संबंधों को आज पर्याप्त विषाक्त कर दिया है। व्यक्तियों में परस्पर त्याग, प्रेम, सहयोग व सहिष्णुता के स्थान पर स्वार्थ और विद्वेष ही अधिक लक्षित है। ''[6]

इस प्रकार शर्माजी के विवेच्य नाटकों में - आर्थिक समस्या दिखाई देती है। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण किशोर को इस व्यवहारी दुनिया में दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती है, तो दया को दिनेश से प्यार करते हुए मजबूरी से अधेड़ उम्र के रामदयाल से शादी करनी पड़ती है।

3.1.2 भ्रष्टाचार की समस्या -

आज देश चारों ओर समस्याओं से घिरा दिखाई देता है। दिन-ब-दिन इसका प्रमाण बढ़ता ही जा रहा है। इन सब समस्याओं से सबसे भीषण समस्या भ्रष्टाचार या रिश्वत की है। आजादी के बाद बढ़ती जा रही रिश्वत की समस्या ने सामान्य जनता को परेशानियों के घेरे में खड़ा कर दिया है। रिश्वत लेनेवाले और देनेवाले इस बारे में नहीं सोचते कि इसकी वजह से देश तथा समाज की कितनी हानी होगी । आज उसे रोखने के लिए अनेक तरह से प्रयास किए जाते हैं., मगर यह कम होने की अलावा कैंसर की बीमारी की तरह बढ़ती ही जाती है। आज छोटे-से-छोटे क्लर्क से लेकर बड़े-बड़े अफ़सरों तक सारे लोग गैरकानूनी कार्य करके वैभवपूर्ण जीवन के लिए संपत्ति जुटा रहा हैं।

आज चारों तरफ भ्रष्टाचार होने का प्रमुख कारण है- सरकारी कर्मचारियों की रिश्वत लेकर या भ्रष्टाचार करके भौतिक -सुख सुविधाओं को पाने की महत्त्वाकांक्षा । डॉ. दिनेशचंद्र वर्मा लिखते हैं: ''देश की राजनीति तथा समाज में रिश्वत और भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण मध्यवर्गीय राजनेताओं तथा सरकारी कर्मचारियों की महत्त्वाकांक्षाएँ।''[7] दिन-ब-दिन बढ़ती महँगाई के कारण वे दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते। उन्हें मिलनेवाली तनख्वाह में सभी सुख-सुविधाओं को वे नहीं पा सकते, इसीलिए आर्थिक वैषम्य को दूर करने के सरकारी अफ़सर रिश्वत लेते हैं, और विलासपूर्ण जिंदगी जीते हैं। लेकिन रिश्वत का पैसा तो दूसरों की खुशियाँ, दूसरों का सुख, चैन और आराम खरीदकर ही कमाया जाता है।

आज देश में भ्रष्टाचार की जड़े इतनी गहराई में जा पहुँची है कि उसे उखाड़ देना मुश्किल ही गया है। भ्रष्टाचार समाज में आवश्यक चीज़ बन गई है। अनेक व्यवस्थाएँ, कानून एवं प्रतिबंध लगाये जानेपर भी ये बढ़ता ही दिखायी देता है। इसका कारण यह है कि आज भ्रष्टाचार करनेवाले लोगों को सजा देने के अलावा उनसे रिश्वत लेकर भ्रष्टाचार करने की उन्हें लायसन ही दे देते हैं।

वर्तमान युग में कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ भ्रष्टाचार नहीं दिखायी देता। जिन आधिकारियों की नियुक्ति आज भ्रष्टाचार रोकने के लिए की जाती है वे ही लोगों से रिश्वत लेकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। 'चिराग़ की लौं' इस नाटक में भ्रष्टाचार की समस्या प्रभावी ढंग से दिखाई देती है। प्रस्तुत नाटक में मेहता, जयंत तथा गिरीश के माध्यम से यह समस्या दिखाई देती है। मेहता भी एक ऐसा ही आयकर अधिकारी है, जो रिश्वत लेकर भौतिक सुख-सुविधाओं को पाता हैं। वह रिश्वत कभी कपड़े, गहने और कभी पैसों के रूप में लेता हैं। उसने भ्रष्टाचार करके अस्सी हजार का मकान बनवाया है। मेहता भी किशोर की तरह आयकर अधिकारी है और वह भी किशोर की तरह दो-सौ-पचास रूपये मासिक तनख्याह पाता है, लेकिन उसके घर खाना बनाने के लिए चालीस रूपये, कपड़े धोने के लिए तीस रूपये और उपर का काम करने के लिए पंद्रह रूपये देकर नौकर रखे हैं। उसके पास बहुतसी क़ीमती चीजे हैं। उसके घर के लोग बड़े-बड़े होटलों में भोजन करते हैं। इसतरह मेहता रिश्वत लेकर अमीर बन गया है।

एक दिन मि.मेहता और मिसेज मेहता किशोर और तारा का नया मकान देखने के लिए आते हैं। दो रूम में सजा तारा का छोटासा संसार देखकर मिसेज मेहता व्यंग्य करती है- जिससे तारा के स्वाभिमान को ठेंच पहुँचती है और वह रोने लगती है। तब तारा को समझाते हुए किशोर कहता हैं -

किशोर - "जो कुछ भी उसके पास है, रिश्वत देनेवालों ने लाकर दिया है।

तारा - क्या? क्या वह रिश्वत लेता है?

किशोर - वह महकमे का सबसे बदनाम अफ़सर है। पहले हैड़क्लर्क था। जब कोई बुरा अफ़सर आ जाता, इसकी चांदी हो जाती। खुद लेता और हिस्सा अफ़सर को देता। अब खुद खाता है, खुद हजम करता है।

तारा - (विस्मय से) और पकड़ा नहीं जाता?

किशोर - (गहरी सांस लेकर) तारा., जब लेनेवाला चालाक हो और देनेवाले को गिला न हो तो आदमी मुश्किल से पकड़ा जाता है। सुना है, अस्सी हजार का मकान बनवाया है! "[8] इस तरह मेहता सामाजिक भ्रष्टाचार का प्रतीक है। मिल-मालिक जयंत और गिरीश भी सामाजिक भ्रष्टाचार के प्रतीक है। वह सामान्य जनता तथा उसके मिल में काम करनेवाले मजदूरों पर अन्याय-अत्याचार करता है। जयंत अपने मिल में तैयार होनेवाले कपड़ों पर ऊँचे दाम छपवाकर बेचता है। अतः इस बात का पता जब सरकार को लग जाता है, तब जयंत शर्मा जैसे रिश्वतखोर अफ़सरों को रिश्वत के रूप में कार देकर उस मामले को दबोच डालता है। तारा की सहेली रानी भी तारा को अधिका-धिक कीमती वस्तुएँ भेट के रूप में देकर तारा के मन में भौतिक सुखों के प्रति लालच निर्माण करती है जिसके कारण तारा को रानी की सभी बातें मीठी लगती हैं और किशोर की सभी बाते कड़वी। तारा बार-बार किशोर के सामने रानी की भौतिक सुख-सुविधाओं तथा अमीरी की प्रशंसा करती है। तब किशोर तारा को रानी के अमीरी का राज बताते हुए कहता है-

"किशोर - जानती हो, आज मोटी-मोटी धोतियाँ मैं तुमको बारह-बारह तेरह-तेरह रूपये में लाकर देता हूँ, वे सब रानी के पति जयंत की मिल की बनी हैं।

तारा- (कुछ न समझकर) तो क्या हुआ?

किशोर - उन धोतियों की लागत मुश्किल से पांच रूपये होती है। पर जयंत उन्हें दस और बारह रूपये में बेचता है, ताकि दूसरों की बीवियां गूदड़ और उसकी बीवी रेशम पहन सके।"[9]

आज आदमी के एक परिवार की विलासपूर्ति के लिए न जाने कितने परिवार उजड़ जाते हैं। रिश्वत लेनेवालों को रिश्वत मीठी चीज़ लगती हैं, लेकिन हर मीठी चीज़ अच्छी नहीं होती। रिश्वत के कारण सामान्य जनता अधिक गरीब बनती जा रही है और अमीर लोग अधिक अमीर। गिरीश एक दलाल है, जो अफ़सरों को रिश्वत देकर अमीर लोगों का काम करता है और स्वयम् अमीर लोगों से रिश्वत और अपना कमीशन लेता हैं। वह आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए रिश्वत को बढ़ावा देता है। गिरीश सामाजिक भ्रष्टाचार का प्रतिक है, जो ईमानदारी की जड़े उखाड़कर रिश्वत को फैलाता है। उसके पार्टियों का प्रयोजन रानी, तारा को बताते हुए कहती है- "केस ठिक कराने, परमिट दिलाने या कोटा अलॉट कराने के लिए अफ़सरों से जान-पहचान जरूरी है। पार्टियों में उनसे जान-पहचान बढ़ाता है, दफ्तरों में जाकर काम कराता है।"[10]

इस तरह गैरकानूनी कामों के लिए गिरीश को लाखों रूपये आमदनी मिलती है। इन कार्यों के लिए उसने एक आंफ़िस खोला है, जिस में 'रिप्रेजेन्टेटिव' के रूप में ' लेड़िज' को नौकरी दी जाती है। वह ऑफ़िस में जाकर झीनी-झीनी साड़ी में अपना बदन दिखाकर अफ़सरों को रिझाती है और उनसे कानून के खिलाफ काम करवाती है। इसके संबंध में डॉ. नरेंद्रनाथ त्रिपाठी लिखते हैं " आर्थिक रूप से पिछड़े हुए परिवार की नवयुतियाँ अर्थ प्राप्ति के लिए अपने शरीर को अर्पित कर देती है ।"[11] इस काम के लिए गिरीश तारा को अपने ऑफ़िस में नौकरी देना चाहता है। तारा की सहायता से वह किशोर को फसाना चाहता है इसीलिए वह तारा के मन में किशोर के ईमानदारी के विरूद्ध बहकाते हुए कहता है-"ग़लत, तारादेवी । ज़िंदगी का एक ही आदर्श है- "जियो और जीने दो- लिव एण्ड लेट लिव।"यह भी क्या कि न खुद जीते हो, न दूसरे को जीने देते हो । अरे, घाटपर बैठे हो तो अपना किराया लो। लोगों की किश्तियाँ क्यों रोकते हो? ।"[12] इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में मेहता,जयंत तथा गिरीश के माध्यम से भ्रष्टाचार की समस्या प्रभावी ढंग से दिखाई देती है।

3.1.3 नकाबी या दिखावटी दुनिया की समस्या -

आज समाज में दोगले व्यक्तित्व को लेकर जीनेवाले लोग ही अधिक मात्रा में दिखाई देते हैं। "जो उपर से सभ्य दिखाई देता है, वस्तुतः वह नहीं है अथवा कोई और नहीं कहा जा सकता। चेहरे पर नकाब चढ़ाए आज हर आदमी अपनें असली चेहरे को छुपाते हैं।"[13] स्वयं को उच्च और सभ्य समझनेवाले लोग अपने घिनौने असली रूप को छिपाने के लिए अपने चेहरे पर नकाब पहनकर घूमते हैं।

'चिराग़ की लौं'नाटक में 'नकाबी दुनिया की समस्या' दिखाई देती है। उपर से सभ्य और सुंदर दिखाई देनेवाले चेहरे के भीतर असली चेहरा कितना घिनौना होता है इसका चित्रण जयंत, रानी तथा गिरीश के माध्यम से दिखाई देता है। जयंत और रानी ने अपने चेहरे पर नकाब ओढ़कर रखा है। जनता की नजरों में अपनी इज्जत बढ़ाने के लिए जयंत और रानी महीने दो महीनों में एकाध बड़े कार्यक्रम का आयोजन करते हैं । ब्लैक से कमाये हुए पैसों से छोटी-छोटी चीज़े खरीदकर लोगों को भेंट के रूप में देकर उन्हें खुश करते हैं। इस कार्यक्रम के लिए वे राष्ट्राध्यक्ष प्रधानमंत्री, तो कभी बड़े-बड़े अफ़सरों को बुलाते हैं । उनके साथ अपनी तस्वीर निकाल लेते हैं। उनके पास चक्रवर्ती जैसे खरीदे हुए संपादक भी मौजुद है, जो रिश्वत लेकर उनके तस्वीरों को छपवाते हैं। अपनी सभ्यता दिखाते हुए रानी तारा को बहकाते हुए कहती है-"हमने पैलैस्टाइन के अरब रिफ़्यूजी बच्चों के लिए

कपड़े और खिलौनों के गिफ़्ट जमा किये हैं। कल के फंक्शन में प्राइम मिनिस्टर उन्हें यूनीसैफ़ के रिप्रेज़ेन्टेटिव को हैण्ड-ओवर करेंगे। ''[14] रानी, तारा को यह दिखाना चाहती है कि गरीब लोगों के प्रति उसके हृदय में कितनी हमदर्दी है। इसतरह रानी अपना असली रूप छिपाकर केवल ख्याति प्राप्त करना चाहती है।

रानी, अपना बड़पन तारा को बताती है, ताकि वह भी उसके जैसा बर्ताव करे, इसीलिए वह तारा को बहकाते हुए कहती है-''पिछले दिनों प्रेसिडेण्ट ने विजिट किया। मेरे साथ उनका फ़ोटो यह है।''[15] इसतरह रानी, [redacted] दुनिया के सामने अपनी असली घिनौना रूप छिपाकर सभ्यता दिखाती है। रानी का पति जयंत भी अपना असली घिनौना रूप छिपाकर लोगों को सभ्यता दिखाता है। वह भी सामान्य जनता के खातिर बड़े-बड़े कार्यक्रम आयोजित करता है., और भ्रष्टाचार करके लाखों रूपये कमाता है। अपना राज छिपाने के लिए वह लोगों को मुफ्त में कपड़े बाँटता है और दूसरी तरफ वह अपनी मिल में तैयार होने वाले कपड़ों पर ऊँचे दाम छपवाकर बेचता है और लोगों का शोषण करता है। इसीलिए उसकी पत्नी रानियों की तरह रहती है- ''क्यों कि उसका आदमी दूसरों की औरतों को बांदियों की तरह भी नहीं रहने देता।''[16]

आज समाज में असली गुनहगार, चोर, लुटेरे ये धनवान लोग ही हैं जो अपना असली रूप छिपाकर सभ्यता और मानवता का बुरखा पहनकर गरीब जनता पर अन्याय-अत्याचार करते हैं। रानी भी तारा को क़ीमती भेटवस्तुएँ देकर उसे बहकाती है। इसीलिए तारा ईमानदार किशोर से नफ़रत करती है तब उसकी असलियत बताते हुए किशोर कहता है-''वे चोर, लुटेरे और खुनी हैं, क्योंकि आज-कल इसके लिए नकाब चढ़ाकर पिस्तौल चलाने या छुरा घोंपने की जरूरत नहीं । एक जरा भाव बढ़ाने से लोगों के लाखों सिक्के इनकी तिजोरियों में सिमटे चले आते हैं । एक ज़रा नफ़े के दांत गहरे गड़ा देने से लोगों की रगों का सारा खून उनके चेहरे में उमंगों और ऐयाशियों की सुर्खी भरने लगता है।''[17]

जयंत अपने मिल के मजदूरों के लिए मैगज़ीन निकालना चाहता है, इसके लिए वह नसीम को जो 'नई दुनिया' का संपादक है- उसे खरीदना चाहता है। एक ओर वह उनपर अन्याय -अत्याचार करता है,तो दूसरी ओर उनके लिए मैगज़ीन निकालना चाहता है। जयंत की मजदूरों के लिए मैगजीन निकालने के पीछे यह चाल है कि उसकी असलियत छिप जाये जिससे मजदूर खुश हो जायेंगे और नसीम को संपादक बनाकर उसे बे-आवाज किया जा सके। मगर नसीम उसके जाल में नहीं फँसता। नसीम को जयंत के काले धंधे को लेकर कुछ सबूत मिल

गये हैं, जिसे अखबार में छपवाकर नसीम उसके घिनौने रूप को समाज के सामने लाना चाहता है। तब जयंत भ्रष्टाचार के कारण होनेवाली बदनामी से बचने के लिए नसीम के दफ्तरों को ही आग लगाता है। जिसके कारण उसके काले धंदों को लेकर प्राप्त किये महत्त्वपूर्ण कागजात नष्ट हो जाते हैं।

इस तरह आज जयंत, रानी , गिरीश जैसे भ्रष्टाचारी लोग अपने काले धंदों या असलियत को छिपाने के लिए अपने चेहरे पर नकाब पहनकर घूमते हैं और सभ्यता का नाटक करते दिखायी देते हैं। वे भोली-भाली जनता पर अपने अमीरी का दबाव डालकर उन्हें चुप कराना चाहते हैं। इसतरह रानी भी औपचारिकता को निभाने के लिए तारा को बहुतसी कीमती वस्तुएँ भेंट के रूप में देती हैं। इन वस्तुओं को देने के पीछे रानी की मानवता नहीं है तो स्वार्थ ही दिखायी देता है।

इसप्रकार ' चिराग़ की लौं' नाटक में जयंत तथा रानी के माध्यम से 'नकाबी दुनिया' की समस्या दिखाई देती है।

3.1.4 निःस्वार्थी देश-सेवकों की समस्या -

स्वातंत्र्योत्तर भारत देश में देशसेवक का मुखौटा पहनकर घिनौने कार्य करनेवालों की बाढ़ सी आ गयी है। गुंड़ा-गर्दी करनेवाले भ्रष्टाचार तथा-चोर-बाजारी करके पैसे कमानेवाले अन्याय-अत्याचार करके आतंक फैलानेवाले लोग ही 'गांधी टोपी' का 'लेबल' लगा के स्वयं को सच्चा देश-सेवक दिखाने का प्रयास कर रहे हैं। ये मुखौटाधारी देशभक्ति दिखाने के लिए हाथियार लेकर लड़ने नहीं जायेंगे अपनी जगह अपना काम सही ढंग से नहीं करेंगे। रिश्वत या चोरी से कमाया हुआ धन डिफ़ेन्स में दे देंगे । एक ओर सामान्य जनता को चोट वे ही पहुँचाते हैं, और दूसरी ओर मरहमपट्टी लेकर सहानुभूति जतलाने पहुँच जाते हैं । सामान्य लोगों में प्रसिद्धि पाने के लिए पैसों के बलबूतेपर संपादकों को खरीदते हैं । बीके हुए संपादक उनकी तस्वीरों को अखबार में छपवाते हैं । सारे गुणों और आदर्शों को उनपर लादकर सच्चा देश सेवक दिखाने का प्रयास करते हैं । भ्रष्टाचार और चोर-बाजारी से कमाये पैसों से छुट-पूट की चीज़े जनता को सौगात के रूप में देकर कहते हैं कि वे ही जनता के सबसे बड़े रहमदिल हैं ।

'चिराग़ की लौं' नाटक में 'नसीम' के माध्यम से निःस्वार्थी देश-सेवकों की समस्या दिखाई देती है । सच्चा देश-सेवक वह होता है, जो आहत जनता की आवाज को सुन सकता है, और निजी स्वार्थ से दूर रहकर जन-कल्याण के लिए कार्य करे । 'नसीम' 'नई दुनिया' का संपादक है । वह सामान्य लोगों के लिए अपने ऐश्वर्यपूर्ण जीवन को ठुकराता है । वह समाचार पत्र के माध्यम से गरीब जनता पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार के खिलाफ़ आवाज बुलंद करता है ।

मजदूरों पर अन्याय-अत्याचार नसीम के दिल में टीस पैदा करती है । वह पूँजीपतियों के काले कारनामों को जनता के संमुख लाकर उनके चेहरे से देश-सेवक का नकली चेहरा उतरना चाहता है । जयंत मिल के लिए स्टील के कोटे को ब्लैक-मार्किट में बेच देता है । इस ब्लैक मार्किट के कुछ सबूत नसीम के हाथ लग जाते हैं । वह अखबार में छपवाकर जयंत के घिनौने रूप को जनता को दिखाना चाहता है । इस बेइज्जती से बचने के लिए जयंत नसीम को पांच सौ रूपये देना चाहता है, साथ ही मिल-मजदूरों के लिए एक नया मैगजीन निकालना चाहता है । संपादक के रूप में काम करने के लिए नसीम को मनाता है । 'नई दुनिया' में नसीम को दो सौं रूपये मिलते हैं । जयंत पांच सौ देने का वादा करता है । लेकिन नसीम जानता है कि उसे खरीदने के लिए जयंत उसके सामने लालच के टुकड़ों को फेंक रहा है । नसीम, जयंत की इस ऑफ़र को ठुकराता है । वह जनता के पक्ष में लढ़ाई लड़ना चाहता है । उसे चारों ओर बे सहारा और बेआवाज जनता नजर आती है, जो अन्याय-अत्याचार को सहती है ।

जयंत को जनता के प्रति कितनी सहानुभूति है, यह दिखाने के लिए मजदूरों के लिए एक मैगज़ीन निकालना चाहता है, और उस में झूठी खबरे छपवाकर उसका संपादक नसीम को बनाना चाहता है । इसके लिए वह नसीम को 500 रू देना चाहता है, मगर उसका इन्कार करते हुए कहता है -

''नसीम - हां, जयंत साहब, आप मुझे पाँच सौ देंगे, ज्यादा भी दे देंगे, पर मेरी आवाज .... मेरी आजादी ... मेरी कलम मुझसे ले लेंगे ।

जयंत - मगर आप अब से अच्छी हालत में रह सकेंगे ।

नसीम - (बड़े दर्द से) लेकिन वे जो बे-आवाज हैं, वे जो अपने सीनों में सितम के खंजर सहते हैं, पर चिल्लाने की ताकत नहीं रखते, उनकी आवाज़ कौन बुलंद करेगा ?

जयंत - आप को उनसे मतलब ?

नसीम - (जज़्बात से काँपकर) जयंत साहब ! मैं शायर हूँ, सूअर नहीं हूँ जो अपना पेट भरने के लिए जहाँ गंदगी देखता है, वहीं मुँह मारने लगता है । जिस दिन इन्सान के बजाए ग़िजा खाकर गंदगी बनानेवाली मशीन बन जाऊँगा, मर जाऊँगा ।" [18]

आज देश में नकली देश सेवकों की भरमार है । वे जनता की आँखों में धूल झोंकने का काम करते हैं, लेकिन आज देश में नसीम जैसों की भी कमी नहीं हैं । जयंत जैसे अमीर लोग उन्हें रिश्वत देकर चुप कराना चाहते हैं, मगर नसीम जैसे निःस्वार्थी देश-सेवक उनकी पोल खोलने का प्रयास करते हैं, उसी वक्त जयंत जैसे अमीर लोग नसीम जैसे लोगों के दफ्तरों को आग लगाते हैं । फिर भी नसीम हारता नहीं बल्कि उनकी पोल खोलकर रहने का निश्चय करता है ।

इस प्रकार 'चिराग़ की लौं' नाटक में निःस्वार्थी देश-सेवकों की समस्या दिखाई देती है ।

3.1.5 बोगस अखबारों की समस्या -

समाज में जनजागृती के लिए समाचार पत्र यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण साधन है । मगर आज इस में परिवर्तन हो गया है । वे भ्रष्ट हो गये हैं । सच्चाईपूर्ण समाचार पत्र अखबार की आत्मा है मगर दिखाई नहीं देते । आज अखबार में झूठे समाचार ही अधिक दिखाई देते हैं । आज अखबार अमीर लोगों की ही जय-जयकार करती हैं । गरीब जनता, मजदूर, अबला या कहीं भी अन्याय अत्याचार हो तो अखबार को उसके खिलाफ़ आवाज उठानी चाहिए । अन्याय को चुप-चाप सहनेवाली जनता का सहारा अखबार ही है । अखबार को जनता के प्रति सहानुभूति होनी चाहिए । उनके अन्याय के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए । लेकिन वे बड़े-बड़े नेता लोग तथा अमीर लोगों की ओर ही सहानुभूति दिखाते हैं । तब बोगस अखबार की समस्या बन जाती है ।

आज गुंड़ा-गर्दी करके गरीब लोगों पर अपना अधिकार जमाने वाले और भ्रष्टाचार से लाखों रूपये कमानेवाले अमीर लोगों की हीं अखबार जय-जय कार कर रही हैं । इन लोगों ने पैसों के बलबूते पर संपादकों को खरीदा हैं । वे लोग जो चाहते हैं, वही समाचार अखबार में छपते हैं । 'चिराग़ की लौं' नाटक में बोगस अखबारों की समस्या प्रभावी ढंग से दिखाई देती है ।

प्रस्तुत नाटक में चक्रवर्ती 'वीकली' नामक बोगस अखबार पत्र का संपादक है । यह अखबार वह जयंत तथा रानी के मेहरबानी से चला रहा है । रानी जो चाहती है, वही समाचार उस में छपते हैं । रानी ख्याति पाने के लिए अपने नाम आर्टिकल्स छपवाती हैं । रानी के नृत्यपर भी एक आर्टिकल लिखा जाता है, जिसे तस्वीरों के साथ चक्रवर्ती छपवाता है । रानी, जो एक साधारण सी डांसर है फिर भी उसे एक श्रेष्ठ डांसर के रूप में दिखाया जाता है । इसके संबंध में रानी चक्रवर्ती से कहती है -

''रानी - आप मेरे डांस के ऊपर जो आर्टिकल लिखवाने वाले थे, उसका क्या हुआ ?

चक्रवर्ती - बिलकुल तैयार है । मैंने भी उस आर्ट-क्रिटिक से लिखवाया है, जिसने पिछली बार कमला लक्ष्मन को भी नहीं बख्शा था । ऐसे गजब का आर्टिकल लिखा है कि धूम मच जाएगी ।

रानी - और फोटो ?

चक्रवर्ती - सब ब्लॉक - मेकर को दे दिये हैं । कवर पर फुल-पेज ट्राइकलर फ़ोटो । तीन पेज का फर्स्ट आर्टिकल और सेण्टर - स्प्रेड़ पर मुद्राओं के पोज़ ।'' [19]

इस तरह आज समाचार पत्रों में बहुतसी झूठी खबरे ही छपती हैं । जिस अखबार को जन जागृती का साधन माना जाता है, वही आज जनता में गलत फहमी फैंलाते हैं । आज ऐसे बहुतसे संपादक दिखाई देते हैं जिन्हें स्वार्थ के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता । आज चक्रवर्ती जैसे अनेक संपादक है जो अमीर लोगों के दास बन गये हैं । अमीर लोग जो बताते हैं, संपादक भी वही समाचार अखबार में छपवाते हैं । वे जन कल्याण के लिए कोई काम नहीं करते बल्कि जनता पर अन्याय ही करते हैं । पैसों के सिवा उन्हें कुछ भी नही दिखाई देता । इस प्रकार 'चिराग़ की लौं' नाटक में बोगस अखबारों की समस्या दिखाई देती है ।

3.2 पारिवारिक समस्याएँ -

3.2.1 असफल प्रेम की समस्या -

प्रेम में इन्सान को जीने का सहारा मिलता है, तो प्रेम की असफलता उसे जीते जी मौत के दर्शन कराती है । प्यार में मग्न होकर प्रेमी को जैसे लगता है कि उसने तीनों लोक हासिल किये हैं, पर यह प्यार जब

असफल हो जाता है, तो वही इन्सान अपने आप को संसार का सबसे बड़ा दुःखी व्यक्ति समझने लगता है । वैसे प्रेम में असफल होने के अनेक कारण है - जैसे जांति-भेद, अमीरी-गरीबी, ऊच्च-नीच, दूर के रिश्ते आदि बातों के कारण प्रेम असफल बन सकता है । एक-बार इन्सान प्रेम में असफल हो गया, तो उसके मन में छायी उदासी पूरे जीवन को व्याप्त कर देती है ।

'न धर्म, न ईमान' नाटक में असफ़ल प्रेम की समस्या प्रभावी ढंग से दिखाई देती है । इस नाटक का नायक दिनेश उच्यवर्गीय और शिक्षित युवक है । वह उसके घर में आश्रित युवती दया से प्यार करता है । दिनेश, दया के साथ विवाह करके वैवाहिक जीवन के सुनहरे सपने देखता है । मगर दादी के कारण उसके ये सपने टूटकर बिखर जाते हैं । दादी, दया को दिनेश की बहन मानती है, और रिश्ता पास का हो या दूर का रिश्ता, रिश्ता मानती है । इसलिए दादी दोनों का विवाह नहीं करना चाहती । मगर दिनेश इन बातों को नहीं मानता । उसके मतानुसार दया उसकी बहन तब हो सकती है, जब वह बाप के पराग से और माँ की कोख से पैदा हुई हो । इसके संबंध में डा. ओमप्रकाश सारस्वत लिखते हैं - "प्रेम एक स्वाभाविक मानवीय संबंध है, जो रिश्तों की कारा में बंद नहीं रहता । प्रेम के इसी मूल्य बोध को नाटककार ने प्रतिष्ठित करना चाहा है ।" [20]

दिनेश किसी भी हालत में दया को अपना बनाने की कसम लेता है और दया को हासिल करने के लिए घर छोड़कर चला जाता है । उसका कहना है कि विवाह तो उसीके साथ होना चाहिए, जिसे पूरी तरह जाना पहचाना हो और जिससे मुहब्बत हो, क्योंकि - "प्रेम की भावना दोनों के मन को एक सुत्र में पिरो देती हैं ।" [21] दादी, दया की शादी उसकी इच्छा के विरूद्ध अधेड़ उम्र के रामदयाल से करती है । दया, दादी के साथ नमकहरामी नहीं करना चाहती, इसलिए इस विवाह का विरोध नहीं करती ।

रामदयाल से विवाह करके दया उसकी नहीं बनती । विवाह के बाद भी वह दिनेश को ही चाहती है । दिनेश भी दया को मिलने के लिए तड़पता रहता है, मगर दया ने दी हुई कसम निभाने के लिए उससे दूर रहता है । दिनेश को जब मालूम होता है कि दया की बीमारी दिन-ब-दिन बढ़ती है और उसका पति उसका इलाज नहीं करता, तब वह दया को मिलने आता है । मगर दया उसे वहाँ से चले जाने को कहती है क्योंकि दिनेश को देखकर उसकी पुरानी यादें ताजा हो जाती है । तब दिनेश कहता है -

"दिनेश - चला जाऊँगा ... लेकिन एक पल के लिए तो उस चेहरे को निहारने दो, जिससे कभी मैं अपनी दुनिया बसाने चला था ।

दया - (मुँह फेरकर और भावनाओं को पूरी तरह दबाकर) वह चेहरा मर गया है ! मिट गया है !

दिनेश - वह मरा नहीं है । वह मेरी आँखों के आकाश में बस गया हे । हर शाम वह मेरी यादों के झुरमुटों के पीछे से चाँद की तरह निकलता है, और रातभर मेरे ख्वाबों की खिड़की में अटका मुझे उन्हीं निगाहों से तकता रहता है । (दया पलटकर उसकी तरफ़ देखती है ।) मैंने लाख चाहा है, मैं लाख चाहूँगा पर वह सब कुछ कभी न भुला सकूँगा ।"[22] इस प्रकार दिनेश और दया एक-दूसरे से अलग होकर एक - दूसरे को एक पल भी नहीं भुला सकते ।

3.2.2 प्रेम के खोखले आदर्श की समस्या -

"आदर्श प्रेम एक कोरा खयाल है ।"[23] भावुकताजन्य अथवा आकस्मिक आकर्षण से प्रेरित प्रेम रोमांटिक प्रेम है, जो आदर्श और कल्पना की परिधि में ही रहता है । वह वैवाहिक संबंध स्थापित करके जीवन के यथार्थ के आगे सफल नहीं होता । प्रेम विवाह के पूर्व प्रायः स्त्री पुरूष में शारीरिक आकर्षण की मात्रा ही अधिक रहती है । प्रथम आवेग में जो दोष परस्पर नहीं जान पाते हैं, वही दोष प्रेम के प्रथम आवेग में समाप्त होते दृष्टिगोचर होते हैं । उनके कारण दांपत्य जीवन में खाई पैदा होती है । व्यक्ति स्वातंत्र्य को लेकर जागृत नारी को प्रेम की अपेक्षा व्यक्ति विचार और व्यक्ति स्वातंत्र्य महत्त्वपूर्ण लगने लगता है ।

जब वे दोनों अपने विचारों को व्यक्ति स्वातंत्र्य को आज़ाद रखने के लिए अपनी अपनी इच्छा के अनसार बर्ताव करने लगते हैं, तो कभी-कभी किसी भी छोटी सी बात को लेकर उन दोनों में झगड़ा होने लगता है। । प्रेम की मदहोश स्थिति में जिन्दगीभर साथ निभाने के जो कस्मे-वादे किये जाते हैं । ये लोग भुल जाते हैं । जिंदगी में किसी भी बात पर समझौता करने के अलावा सदा से लिए एक - दूसरे से अलग होना पसंद करते हैं । तब प्रेम के खोखलें आदर्श की समस्या निर्माण होती है ।

'चिराग़ की लौं' नाटक में प्रेम के खोखलें आदर्श की समस्या प्रभावी ढंग से दिखाई देती है । इस नाटक की तारा किशोर से प्यार करती है और घरवालों की इच्छा के विरूद्‌ध गरीब किशोर से विवाह करके हँसी खुशी रहती है । तारा किशोर के अस्तित्व में ही अपना अस्तित्व मानती है । किशोर के अस्तित्व में ही अपना अस्तित्व माननेवाली तारा किशोर के साधारण स्थिति से उब जाती है । भौतिक सुखों की लालची तारा किशोर के पद का लाभ उठाकर धन कमाना चाहती है । वह जीवन के रंगीन सपने देखती है, जो किशोर के आदर्श और ईमानदारी से पूरे नहीं होते । तारा बार-बार किशोर को रिश्वत लेने को कहती है, मगर किशोर उसका विरोध करता है, तब तारा के मन में किशोर के ईमानदारी के प्रति नफ़रत पैदा होती है और किशोर से कहती है -

"तारा - ईमान, ईमान, ईमान ! मेरे तो कान पक गए हैं ।

किशोर - मेरे ईमान को सुनकर ?

तारा - हां, तुम्हारे ईमान को, तुम्हारे आदर्श को, तुम्हारे संन्यासीपन को सुनकर - जिसने मुझे इस दुनिया की हर चीज़ से वंचित कर दिया हे ।" [24]

इस प्रकार तारा का आदर्शपूर्ण प्रेम आर्थिक वैषम्य के एक ही झटके से टूट जाता है । तारा, जिसे आदर्श प्रेम समझ रही थी, वह उसका भ्रम था । वह मदहोश की स्थिति थी, जो यथार्थ के निर्मम थपड़े खाकर कच्चे शीशे की भाँति चूर-चूर हो जाता है । परिस्थितियों के आगे झुकनेवाला प्रेम स्वार्थपूर्ण होता है । समझौते से सुख-सुविधाएँ तो मिलती हैं लेकिन ऊँचाई नहीं । तारा का प्रेम परिस्थितियों के साथ समझौता करनेवाला स्वार्थपूर्ण प्रेम है । किशोर तारा के सहारे भ्रष्टाचार और चोर-बजारी का पर्दाफ़ाश करना चाहता है, लेकिन तारा अर्थाभाव की स्थिति में किशोर का साथ नहीं देती । जब किशोर रिश्वत लेने से इन्कार करता है, तब तारा कहती है :-

"तारा - (विद्रोह के स्वर में) हां, मुझसे अब तरस-तरसकर नहीं जीया जाता । मुझे तुम्हारे खयाल नहीं चाहिए, आदर्श नहीं चाहिए । मुझे जीवन चाहिए जो आराम, रूपये और रेशम के लिए तरसते - तरसते ऐसा बे-रंग, बे-रूप न हो जाए जैसे मैं ।

किशोर - (फटी-फटी आँखों से देखकर) यह तुम क्या कर रही हो ?

तारा - जो मेरे जीवन का भयानक सच है । कभी मैं इस रानी के बराबर थी ... उससे अच्छी थी । पर आज

... तुम्हारे आदर्श और खयालों की आंच में जलकर मेरा रंग धुआं हो गया, तन कोयला हो गया, कपड़े उसकी आया से भी गिर गए । मन के इस सौंदे में मैं बुरी तरह लुट गई हूं।" [25]

इस तरह 'चिराग़ की लौं' नाटक में प्रेम के खोखलें आदर्श की समस्या दिखाई देती है । किशोर के अर्थाभाव की स्थिति तारा के आदर्श प्रेम की कसौटी है, लेकिन उसका प्रेम उस कसौटीपर नहीं उतरता ।

3.2.3 प्रेम विवाह की समस्या -

भारतीय समाज में धर्म, जांति-पाँति का विचार न करके प्रेम विवाह करनेवाले स्त्री-पुरूष के जीवन में बहुत समस्याएँ पैदा होती हैं । "उच्च वर्ग से लेकर निम्नवर्ग तक प्रेम विवाह देखने को मिलते हैं, किंतु निम्न वर्ग के लोग अभीतक परंपरित और जाँति-विधान के घेरों में आबद्ध हैं । वे प्रेम-विवाह को बुरा मानते हैं ।" [26] प्रेम विवाह करनेवालों की दृष्टि में ऊँच-नीच, जाँति-पाँति सभी बाते निरर्थक हैं । इन्सान जिसे चाहता है, उसे हरदम अपने पास, अपने घर में अपने कलेजे में छिपाकर रखना चाहता है ।

"प्रेम विवाह में परिणत होने के मार्ग में मुख्यतः तीन बाधा आ सकती हैं - पारिवारिक विरोध, जांति-पाँति की भिन्नता, और वर्ग या श्रेणी की भिन्नता ।" [27] समाज में प्रेम विवाह करते समय ऊपरी कोई न कोई बाधा आती है, जिससे मनुष्य के पारिवारिक जीवन के संबंधों में कटुता आ जाती है ।

'न धर्म, न ईमान' नाटक में 'प्रेम - विवाह की समस्या प्रभावी ढंग से दिखाई देती है । दिनेश आधुनिक विचारोंवाला शिक्षित युवक है । वह दया नामक युवती से प्यार करता है, जो उसके घर में आश्रित है । दिनेश दया के साथ विवाह करना चाहता है, मगर पुरान मतवादी दादी इस विवाह का विरोध करती है । उसका कहना है कि -दिनेश उच्च घर का और दया नीच घरकी लड़की है, इसका दूसरा कारण है कि दादी दया को दूर के रिश्ते से बहन मानती है और रिश्ता पास का हो या दूर का रिश्ता रिश्ता मानती है और एक ही खून में विवाह हो जाने से नस्ल कमजोर हो जाने का दादी को डर लगता है, इसलिए वह दादी उन दोनों के विवाह का विरोध करती है ।

दिनेश के पिताजी जब उन दोनों के शादी का प्रस्ताव दादी के सामने रखते हैं, तब दादी अत्याधिक क्रोधित होते हुए कहती है - "(जैसे किसी ने डंक मार दिया हो, कुर्सी से उठ खड़ी होती है) क्या ? दिमाग़ तो खराब नहीं हो गया ? चील की बीट तो नहीं खा ली है, बाप -बेटोंने ?" [28]

इस प्रकार दादी किसी भी हालत में उन दोनों का विवाह नहीं करना चाहती । दिनेश दया को हासिल करने के लिए घर छोडकर चला जाता है, जब चाची उसे रूकने के लिए कहती है तब दिनेश कहता है- "जहाँ मेरी मुहब्बत के लिए जगह नहीं है, वह घर मेरा नहीं हो सकता ।" [29]

दिनेश संसार के सारे बंधनों को तोड़कर दया को अपनाने को तैयार था, मगर दया उसका साथ नहीं देती । वह दादी के साथ नमकहरामी नहीं करना चाहती । दादी, दया की शादी अधेड़ उम्र के रामदयाल से करा देती है, मगर दया वहाँ न शारीरिक रूप से जुड़ पाती है न मानसिक । दया अंदर ही अंदर घुंटकर तपेदीक की मरीज बन जाती है, और दिनेश दया के बगैर देवदास की तरह जिंदगी बीताता है । चाची दिनेश को डाक्टर की बात मानकर शादी करने को कहती है, तब दिनेश उसे कहता है -

"दिनेश - अब मेरे लिए अलाव कभी नहीं जलेगा ।

चाची - यह तेरी ज़िद है ।

दिनेश - ज़िद नहीं है, चाची जी । मेरे सीने में जुल्म का जो खंजर गड़ा है, उसे वक्त का मज़बूत हाथ भी नहीं उखाड़ सकता । मेरे लिए सब कुछ खत्म हो गया है ।

चाची - डाक्टर के कहने का भी कुछ असर नहीं हुआ ?

दिनेश - डाक्टर इलाज करते हैं, उन्होंने दर्द देखे हैं, सहे नहीं हैं ।" [30]

इस प्रकार दिनेश दया के अलावा जिंदगीभर अविवाहित रहने की कसम लेता है । और अंत में दया को पत्नी के रूप में स्वीकार करता है ।

3.2.4 अनमेल विवाह की समस्या -

अनमेल विवाह एक कुप्रथा है । इसके दुष्परिणाम नारी को ही भुगतने पड़ते हैं । पुरूष अपनी इच्छा या वासनापूर्ति के लिए नारीपर मनमाने अत्याचार करता है । घर की परिस्थितियों के कारण बेचारी लड़की चुप-चाप अत्याचार सह लेती है, तो कभी विद्रोह करती है । इसके बारें में डा. कलावती प्रकाश लिखती है - ''अनमेल विवाह भी भारतीय हिंदू समाज के लिए अभिशाप सिद्ध हुआ है । इसका मूल दहेज प्रथा में ढुँढ़ा जा सकता है । यह प्रथा उस समय और भी दुःखमयी हो जाती है जब वर वृद्ध और वधु युवती ।'' [31]

आज परंपरागत चली आ रही विवाह संस्था में परिवर्तन होते रहे हैं । यह परिवर्तन कभी - कभी रूढ़ियों के विद्रोह स्वरूप भी होते हैं । जैसे; अनमेल विवाह, बाल विवाह, बहुविवाह । ''बहुविवाह और अनमेल विवाह की असामाजिक और कल्याणकारी परंपराएँ हिंदू समाज के लिए अभिशाप सिद्ध हुई हैं । उसके विधान में ऐसी मुलभूत कमी है कि उसने संपूर्ण सामाजिक विधान को विषाक्त कर दिया ।'' [32]

अनमेल विवाह आधुनिक युग की महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या रही है । पूँजीवदी समाज व्यवस्था के कारण अनमेल विवाह होता है, जो स्त्री-पुरूषों को विवश कर देता है । इस समस्या के कारण पर प्रकाश डालते हुए डा. रमेश तिवारी लिखते हैं -''अनमेल विवाह वैवाहिक समस्या का पहलू है, जो दहेज प्रथा तथा आर्थिक निर्धनता के कारण समाज में प्रचलित हुआ ।'' [33]

'न धर्म, न ईमान' नाटक में अनमेल विवाह की समस्या दिखाई देती है । इस नाटक का नायक दिनेश उच्च घर का लड़का है । वह उसके घर में आश्रित युवा लड़की दया से प्यार करता है, और उससे शादी करना चाहता है । मगर पुराने विचारोंवाली दादी इस शादी के लिए तैयार नहीं होती । दादी, दया का विवाह अधेड़ उम्र के रामदयाल से करा देती है । दादी के साथ नमकहरामी न हो, इसीलिए दया भी इस विवाह का विरोध नहीं करती । मगर रामदयाल से शादी करके दया सुखी नहीं होती । शादी के बाद भी वह दिनेश को ही चाहती है। । अंदर - ही - अंदर घूँटकर वह टी. बी. की मरीज बन जाती है । ''पति-पत्नी परिवार रूपी रथ के दो पहिए है, दोनों का भी बराबर महत्त्व है । इन दो पहियों में यदि एक दृढ़ है और दूसरा भग्नावस्था में है तो, परिवाररूपी रथ गंतव्यतक पहुँचने में असमर्थ होगा ।'' [34] रामदयाल दया को किसी भी वजह से तकलीफ़ पहुँचाने का प्रयास

करता है । दया टी. बी. की मरीज है, फिर घर का पूरा काम करना पड़ता है । अगर कमजोरी की वजह से उससे काम नहीं हुआ तो रामदयाल उसे डाँटते हुए कहता है -"(चिढ़कर) तुझसे होता क्या है ? न काम की, न धाम की, बस कभी कमजोरी कभी बुखार (दया खाँसती है) और एक यह खाँसी है कि साली हर वक्त ठनकती रहती है !"[35]

दया की बीमारी दिन-ब-दिन बढ़ती ही जाती है, फिर भी रामदयाल उसका इलाज करने के अलावा झाड़फुक की दवा देता है, और भगवान पर भरोसा करके इक्कीस दिन तक निर्जल व्रत रखने को कहता है । रामदयाल उसे जिंदा रखने के अलावा उसके मरने की राह देखता है, ताकि जल्द ही जल्द वह तीसरी शादी कर सके । दिनेश को जब यह बात मालूम होती है, तब दिनेश दया को दी हुई कसम तोड़कर उसे मिलने आता है । वह रामदयाल को समझाते हुए कहता है कि आप भगवान के अलावा डाक्टर पर भरोसा करो तब उसपर क्रोधित होते हुए रामदयाल कहता है -

"रामदयाल - (निर्णयात्मक स्वर) फिर मुझे नही बचाना ।

दिनेश - (चौंककर) क्या ?

रामदयाल - मैं डाक्टरों का इलाज नही कराऊँगा, नही कराऊँगा !

दिनेश - (संयम खोते हुए) चाहे वह मर जाए ?

रामदयाल :- हाँ ।"[36]

इस प्रकार रामदयाल दया के मरने की राह देखता है । दया शादी के बाद भी दिनेश चाहती है और अंत में पति के रूप में स्वीकार करती है ।

3.2.5 अविवाह की समस्या -

निर्धनता, शारीरिक विकृति एवं चारित्रिक दोष के कारण अविवाह की समस्या की समस्या निर्माण होती है । ऐसे युवक-युवतियाँ प्रकट रूप में यौन संबंध स्थापित कर नये सिद्धांत स्थापित करते हैं ।

इसके अतिरिक्त कभी-कभी वे आत्मदमन करते हुए कुंठित जीवन व्यतित करते हैं और कभी - कभी वेश्यावृत्ति आप्रकृतिक दुष्कर्म तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों को बढ़ावा देते हैं । कभी - कभी ऐसा भी दिखाई देता है कि इच्छित ध्येय पूर्ति के लिए विवाह को करिअर में बाधक समझ कर लोग जिंदगी भर अविवाहित रहते हैं । 'कुआँरा रहते हुए वे सभी प्रकार की इच्छा आकांक्षाओं की तृप्ती करते हैं । 'अँधेरा का बेटा' नाटक में यह समस्या दिखाई देती है । कर्नल नगांयच विवाह को 'करिअर' में बाधक समझकर जिंदगीभर अविवाहित रहते हैं । आज वे रिटायर्ड़ कर्नल हैं । उन्हें लगता हैं कि फौज में रहते हुए आदमी जितना बड़ा राइटर और फिलासफर बन सकता है और कही नहीं बन सकता । वे स्वयम् एक राइटर है और अपने बेटे को भी राइटर बनाना चाहते हैं । उन्हें लगता हैं कि कुआँरा रहते हुए ही आदमी सभी इच्छा - आकांक्षाओं की पूर्ति करता है ।

कर्नल नगायंच जिंदगीभर अविवाहित रहते हैं । मगर शादी के सिवा उन्होंने सभी प्रकार के रिश्ते कायम किये है । इसके संबंधी वे संतोष को कहते हैं - ''मुझे देखो । मैंने शादी नहीं की ! (आँख मींचकर) जिस बेटे की बात की थी, वह मेरा भतीजा है । जब काम ही जान लेना और देना हो, तो आदमी को कुआँरा रहना चाहिए । कुआँरा रहने की वजह से मैंने जिंदगी और मौत दोनों को खूब 'स्ट्रिपटीज' किया है । आधी दुनिया देखी, सब तरह की शराबें पीं । सब तरह की औरतों के साथ शादी के सिवा सब तरह के रिश्ते कायम किये । क़त्ल किये । जानें बख्शीं । कोर्ट मार्शल कराए डेकोरेशन लिए !'' [37] इस प्रकार अँधेरे का बेटा नाटक में अविवाह की समस्या दिखाई देती है ।

3.2.6 विधवा समस्या -

भारतीय समाज में जो परंपरा रूढ़ियाँ एवम् रीतिरिवाज चली आयी हैं उन्हीं का पालन आज भी विज्ञान युग में हो रहा हैं । सती प्रथा, विधवा-विवाह, बालविवाह, दहेज प्रथा, परदा प्रथा आदि प्रथाएँ ऐसी हैं, जिस में नारी को कटघरे में बाँध रखा हैं । इतना ही नहीं बचपन में वह माता-पिता के अधीन रहती है, तो जवानी में पति के अधीन और बुढ़ापे में बेटों के सहारे रहनेवाली नारी मुक्त ही कहाँ हैं ? विधवा विवाह के प्रति कई समाज सुधारकोंने कदम उठाये लेकिन परंपरा प्रिय संस्कृतिने इसे नकारा हैं । विधवाओं की ओर आज भी अंधःश्रद्धा से देखा जाता है । उन से शुभ कार्यों में, समारोहों में सहयोग नहीं लिया जाता । उनका दर्शन भी अपशकुन माना जाता

है । विधवा बनाने के लिए जिम्मेदार कौन हैं ? उनका भी मन है, भावनाएँ हैं, वह भी इन्सान हैं । इस बात को समाज स्वाकारता नहीं है ।

इस प्रकार आज विज्ञान युग में भी रूढ़ी परंपराओं को माना जाता हैं । इसके संबंध में डा. गोपाल कृष्ण अग्रवाल लिखते हैं, - ' ' स्त्री के लिए विधवा होना एक दुर्भाग्य की बात है और यह उसके पूर्वजन्मों का फल हैं । इस आधार पर विधवाओं को पवित्र संस्कारों और अनुष्ठानों में भाग लेने से वंचित रखा जाने लगा ।'' [38] मगर अब उस में परिवर्तन होना चाहिए । विधवाओं का पुनर्विवाह कर उनका दुःख कम करने का प्रयास करना चाहिए । इसके संबंध में डा. जयश्री लिखती है कि - ''विधवाओं की दुःखी स्थिति का मुख्य कारण यह है कि उन्हें पुनर्विवाह अनुमति नहीं दी जाती थी । यदि कोई स्त्री साहसपूर्वक पुनर्विवाह कर भी लेती थी तो समाज उसे बहिष्कृत कर देता था ।''[39] लेकिन आज इस में थोड़ासा ही क्यों न परिर्वतन दिखायी देता हैं । शिक्षित विधवा युवती इन सब बातों को न मानकर पुनर्विवाह कर अपना जीवन सुखी बनाती है ।

'अँधेरे का बेटा' नाटक में विधवा समस्या प्रभावी ढंग से दिखाई देती है । इस नाटक में सकीना, मीरा और अंत में निरूपमा भी विधवा हो जाती है । सकीना सूबेदार बादशाह खाँ की विधवा पत्नी है । उसके पति की नेफा में युद्‌ध करते समय मृत्यू हो जाती है । संतोष जब पहली बार निरूपमा की घर आता है तब निरूपमा की बेटी शेबनम सकीना की पहचान कराते हुए कहती है, ये हमारी सकीना आंटी हैं, ''हमारे डैडी के सूबेदार साहब बादशाह खाँ थे । उनकी नेफ़ा में डैथ हो गई । तब से यहीं रहती हैं ! '' [40]

सकीना को मालूम है कि उसके पति की मृत्यू मेजर नारंग के कारण हुई है । फिर भी वह चुप रहती है । मेजर नारंग नेफ़ा में फ्रंटपर युद्‌ध करते समय अपनी स्वार्थपरायणता के कारण आपने अन्य साथियों को आगे करके स्वयम् पीछे हट जाते हैं जिस में मीरा और सकीना के पति की मृत्यु हो जाती है । युवावस्था में विधवा होकर भी सकीना अंधःविश्वास के कारण दूसरा विवाह नहीं करती तो नौकरानी की तरह निरूपमा के घर का पूरा काम अकेली करती हैं ।

मीरा के पति की मृत्यु भी मेजर नारंग के कारण ही हुई हैं । वह भी विधवा हैं लेकिन मीरा एक शिक्षित युवती होने के कारण एक कॉलेज में लेक्चरर है । और जल्द ही जल्द वह संतोष के साथ शादी करनेवाली

है । मेजर नारंग अपने को लगा हुआ कलंक धो डालने के लिए युद्ध के लिए जाते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है । निरूपमा भी विधवा हो जाती है । इस प्रकार अँधेरा बेटा नाटक में विधवा समस्या दिखाई देती है ।

3.2.7 अंधःविश्वास की समस्या -

बीमारी में डाक्टरी इलाज न करना अंधःविश्वास हैं । ऐसा करने से खड़ी होनेवाली समस्याओं का विचार इस में किया है । कोई डाक्टर धनवंतरी का अवतार नहीं हैं । डाक्टरी इलाजों के बजाय पूजा पाठ करना निर्जल व्रत रखता ऐसा मानना अंधःविश्वास ही है । ऐसे करने से स्त्री की बीमारी बढ़ जाए तो उसका दुष्परिणाम स्त्री को ही भुगतना पड़ता है ।

'न धर्म, न ईमान' नाटक में दादी के अंधःविश्वास मान लेने से दया का जीवन दुःखपूर्ण हो जाता है, पर अंत में अंधःविश्वास तोड़ देने से दया सुखी हो जाती है, इसका चित्रण मिलता है । दिनेश की दादी दूर के रिश्तेदार दया तथा उसके पिता को घर में सहारा देती है । युवती दया, दिनेश की ओर आकर्षित होती है । दोनों प्रेम करने लगते हैं और विवाह करना चाहते हैं । जब दिनेश दादी को विवाह के लिए इजाजत माँगता है, तब दादी उसपर अत्याधिक क्रोधित होकर शादी से इन्कार कर देती है, क्योंकि वह दया को दिनेश की दूर के रिश्ते की बहन मानती थी । दादी दिनेश को कहती है - "तुझे बनानी है, तो तू बना ! दया छोड़ किसी मेहरी-कहारी से शादी कर ले !"[41]

इससे दिनेश चुप हो जाता है । दादी दया की शादी अधेड़ उम्र के रामदयाल से करा देती है । मगर दया वहाँ न शारीरिक रूप से जुड़ पाती न मानसिक रूप से । वह टी. बी. की मरीज बन जाती है । दिन-ब-दिन दया की बीमारी बढ़ती ही जाती है मगर दादी अंधःविश्वास के कारण डाक्टरी इलाज करने की अलावा भगवान पर भरोसा करके उसे निर्जल व्रत रखने को कहती है । वह रामदयाल से कहती है - "अगले सोमवार से देवी का इक्कीस दिन का पाठ चलेगा। यह निर्जल व्रत रखेगी । तू रोज सुबह मुट्ठीभर बाजरा छत पर कबूतरों को डाल आया कर । जैसे - जेसे वे दाने चुगेंगे, इसका रोग तिल - तिल करके घटता जाएगा ।"[42]

इस तरह दादी अंधःविश्वास के कारण दया की बीमारी का इलाज नहीं करती, जिससे उसकी बीमारी इतनी बढ़ती है कि वह खून की उल्टियाँ करने लगती हैं, तब उसे अस्पताल में भर्ति किया जाता है । मगर

उसके आपरेशन के लिए घर का कोई भी आदमी खून देने को तैयार नहीं होता, तब डाक्टर उन्हें खून खरीद लाने को कहते है, तब दादी रामदयाल से कहती है -

''दादी - अगर लुगाई पर पराए मरद का परछावाँ पड़ जाए तो वह क्या हो जाती है ?

रामदयाल - पतिता ।

दादी - और अगर बेटी के बदन में बाप के अलावा किसी और का खून मिल जाए ?

रामदयाल - वेश्यापुत्री ।

दादी - तो अक्ल के कोल्हू ! तू अपनी लुगाई के बदन में जाने किस - किस का खून डलवा के उसे क्या बनाने जा रहा है ? अरे उसकी जान तो सोख ली, अब उसका अगला जन्म तो खराब न कर ।'' [43]

इस तरह दादी के अंधःविश्वास मान लेने से दया अनमेल विवाह की शिकार हो जाती है, तपेदीक की शिकार हो जाती है, और आगे डाक्टरी इलाजों के अभाव में उसकी बीमारी हद से ज्यादा बढ़ जाती हैं । पर जब दिनेश खुद अंधःविश्वास को तोड़ देता है, तो यह समस्या दूर होती है ।

3.2.8 दांपत्य प्रेम की समस्या -

भारतीय संस्कृति में पति को परमेश्वर माना जाता है । मध्ययुग के पहले पत्नी भी देवी की तरह पूजनीय थी । बालिका वधु पति की हर बात मान लेती थी । उसकी ओर से दांपत्य प्रेम की समस्या का कोई सवाल ही नहीं उठता था । आधुनिक युग की नारी शिक्षित है, आत्मनिर्भर बनी है, इसीलिए वह पति को परमेश्वर के रूप में स्वीकार करने को राजी नहीं है । वह पति को अपना साथी सहचरी समझती है । 'चिराग़ की लौं' नाटक में दांपत्य प्रेम की समस्या दिखाई देती है । इस नाटक की नायिका तारा अमीर घर की बेटी होकर भी किशोर के आदर्शवाद और ईमानदारी पर मुग्ध होकर घरवालों के इच्छा के विरूद्ध प्रेम विवाह करती है । मगर तारा अपनी सहेली रानी के बहकावे में आकर किशोर के ईमानदारी को कलंक लगाती है तब किशोर उसका साथ छोड़कर चला जाता है, और दांपत्य प्रेम की समस्या निर्माण होती है ।

किशोर ईमानदार आयकर अधिकारी है । उसके आंफ़िस के सभी लोग रिश्वत लेते हैं, मगर किशोर कभी भी रिश्वत नहीं लेता, तो जो रिश्वत लेते हैं, उनपर कड़ी कार्यवाही करता है । प्रथम तारा भी किशोर का पूरा साथ देती है, मगर उसकी सहेली रानी तारा के मन में भौतिक सुखों के प्रति लालच निर्माण करती है । तारा भी अन्य अफसरों की तरह रिश्वत लेकर सुख-सुविधाओं को पाना चाहती हैं । इसीलिए उन दोनों में बार-बार झगड़ा हो जाता है । भौतिक सुख-सुविधाओं को पाने के लिए तारा रिश्वत लेकर किशोर की ईमानदारी को कलंक लगाती है । तब तारा के धोखादड़ीपूर्ण व्यवहार से किशोर दुःखी होता है । यही घटना किशोर के मन पर भारी आघात करती है । किशोर तारा को छोड़कर दूर चला जाता है, जहाँपर धोखेबाज स्वार्थी तारा की छाया भी न पड़े । अपनी ईमानदारी को सुरक्षित रखने के लिए कही दूर कर लेता है । जाते वक्त वह अपनी बेटी बेबी को भी साथ ले जाना चाहता है, ताकि माता के पतन की मनहूस छाया उस पर न पड़े । किशोर के निश्चय को सुनकर तारा के पैर उखाडने लगते हैं । क्योंकि जिसके पद के आधारपर वह जो कुछ कर रही थी वही दूर चला गया तो इस बाजार में उसे पूछेगा कौन?

तारा को अपनी गलती का एहसास होता है और इसीलिए वह किशोर से अलग नहीं रहना चाहती । तब तारापर क्रोधित होते हुए कहता है -"(कटुता, विषाद और वेदना से) अपने सपनों को पूरा करके, मेरे खयालों का खून करके, मुझे मेरे ईमान और आदर्श से महरूम करके तुम आज मुझे सहारा देने आयी हो ? (उसे कंधों से पकड़कर) दूर हो जाओ मेरे नजरों से !" [44] किशोर तारा को अकेली छोड़कर अपनी बेटी को लेकर दूर चला जाता है, तब दांपत्य प्रेम की समस्या निर्माण हो जाती है ।

'अँधेरे का बेटा' नाटक में पति अपने कर्तव्य से दूर भागता है तो पत्नी उससे नफ़रत करने लगती है, तब दांपत्य प्रेम की समस्या निर्माण होती है । इस नाटक में नायक मेजर नारंग को एक आदर्श व्यक्ति मानकर निरूपमा लेखक मित्र की अपेक्षा मेजर नारंग से विवाह कर लेती है । वह अपने पति की बहादूरीपर नाज करती है, पर एक बार बॉर्डरपर गये मेजर नारंग मृत्यु के डर से अपने अन्य साथियों को आगे करके स्वयम् पीछे हट जाते हैं । जिसके कारण उनका सुपरसेशन होता है और उनके अन्य साथियों का प्रमोशन । तब निरूपमा अत्यंत दुःखी होती है । उसे लगता है कि उसके पति के साथ धोखा हुआ है, तब वह अपना हक् माँगने के लिए कर्नल को मिलना चाहती है । मगर मीरा द्वारा जब उसे असलियत मालूम होती है तब वह पति से नफ़रत करने लगती है । रात को

जब मेजर नारंग वापस आते हैं, तब वह उन्हे फ्रंटपर के प्रसंग के बारे में पूछती है, तो उसे विश्वास होता है कि मीरा और सकीना के पति की बलि चढ़ाकर उन्होंने अपनी जीवनी बचायी है । तब नीरू उसे कटकर रहने लगती हैं । दोनों के मौत के जिम्मेदार मानकर वह पति से संबंध ही तोड़ देती है । मेजर नारंग जब उसे असलियत बताने का प्रयत्न करते हैं, तब नीरू उसे कहती है -" अब तुम कुछ नहीं कह सकोगे, क्योंकि तुम वह नहीं हो, जो मैंने समझा था ! मुझे राख की बुझती चिनगारी नहीं, युरेनियम का फटता एटम चाहिए था, जो आदमी होता है, हुआ है, होगा !"[45] इस प्रकार निरूपमा पति संबंध तोड़ देती है, तब दांपत्य प्रेम की समस्या निर्माण होती है ।

'न धर्म, न ईमान' नाटक में भी दांपत्य प्रेम की समस्या दिखाई देती है । इस नाटक का नायक दिनेश उसके घर में आश्रित युवा लड़की दया से प्यार करता है । मगर पुराने विचारोंवाली दादी इस विवाह के लिए तैयार नहीं होती । वह दया की शादी अधेड़ उम्र के रामदयाल से करा देती है। लेकिन विवाह बाद भी दया दिनेश को ही चाहती है तब दाम्पत्य प्रेम की समस्या निर्माण हो जाती है ।

दया दिनेश के लिए अंदर-ही-अंदर घुँटकर तपेदिक की मरीज बन जाती है । इसीलिए डाक्टर उसका आपरेशन करना चाहते हैं । मगर उसके आपरेशन के लिए उसका पति या घर का कोई आदमी खून नहीं देता तब दिनेश अपना खून देकर दया की जान बचाता है । दया रामदयाल के अलावा दिनेश के साथ रहना चाहती है । इसके संबंध में वह दिनेश के पिता से कहती है - "पिताजी, जिसके साथ मेरे फेरे फिरे थे, उसने मुझे कभी नही चाहा । मैंने भी उसे कभी नहीं चाहा । हम एक-दूसरे को बस तकलीफ़ और घुटन और एक सड़ती हुई लाश-सा-रिश्ता दे सके हैं । पर शुक्र है, मौत के आगे, उन्होंने रिश्ते की उस गाँठ को खोल दिया, जिसने उस लाश को बाँध रखा था ।"[46] दया रामदयाल से रिश्ता तोड़कर दिनेश के साथ रहने का निर्णय लेती है, तब दांपत्य प्रेम की समस्या निर्माण होती है । इस प्रकार शर्माजी के विवेच्य नाटकों में दांपत्य प्रेम की समस्या निर्माण होती है ।

निष्कर्ष -

उपर्युक्त समस्याओं का अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शर्माजी के नाटकों में चित्रित आधुनिक युग की आम जनता को रोज मर्रा जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है । इनके नाटकों में सामाजिक समस्या तथा पारिवारिक जीवन संबंधी अनेक समस्याएँ दिखाई देती हैं ।

सामाजिक समस्या के अंतर्गत आर्थिक समस्या भ्रष्टाचार की समस्या नकाबी दुनिया की समस्या निस्वार्थी देश सेवकों की समस्या तथा बोगस अखबार की समस्या आदि समस्याएँ दिखाई देती हैं।

आर्थिक समस्या शर्माजी के नाटकों का प्राणतत्व हैं। इस अर्थाभाव के कारण ही छोटे - छोटे परिवार टूट रहे हैं। रिश्ते - नाते अपनेपन तथा सहकारिता की भावना नष्ट हो रही है। समाज में दिखावटीपन तथा पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने की वृत्ति बढ़ रही है। इस संस्कृति के प्रभाव के कारण विलासी वृत्ति बढ़ रही है। रिश्ते - नाते खोकले बनते जा रहे हैं। समाज में भ्रष्टाचार की वृत्ति बड़े पैमाने पर पनप रही है। पग - पग पर भ्रष्टाचार दिखाई देता है। न्याय मिलना कठिन हो गया है। गरीब परिवार अन्याय, अत्याचार तथा शोषण के शिकार हो चुके हैं। पैसों के पीछे भागनेवाले इन भ्रष्ट अधिकारियों ने अपने ईमान तथा स्वाभिमान को अमीर लोगों के पास गिरवी रखा हैं। इसीकारण भ्रष्टाचार कॅन्सर की बीमारी की तरह बढ़ता ही जाता है।

आज आर्थिक विषमता के कारण पूँजीवादी वर्ग अधिक बलवान होता जा रहा है और गरीब जनता अधिक गरीब। कमानेवाले अकेले व्यक्तिपर पूरा परिवार निर्भर होने के कारण उन्हें अनेक समस्याओंका सामना करना पड़ रहा है। परिणाम स्वरूप अर्थाभाव के कारण मनुष्य को गलत रास्ते अपनाने के लिए मजबूर किया जाता है। आज नारी भी इससे दूर नहीं है। वह भी पैसा कमाने के लिए रिश्वत चोरी तथा अनैतिक आचरण आदि को अपनाती है। इसका चित्रण 'चिराग़ की लौं' नाटक की तारा के माध्यम से दिखाई देता है।

आज समाज से दोगले व्यक्तित्व को लेकर जीनेवाले लोग ही अधिक मात्रा में दिखाई देते हैं। उपर से जो सभ्य और सुंदर दिखाई देनेवाले चेहरे के भीतर असली चेहरा कितना घिनौना होता है, यह 'चिराग़ की लौं' नाटक में जयंत, रानी तथा गिरीश के माध्यम से दिखाई देता है। साथ ही इस नाटक में बोगस अखबारों की समस्या भी दिखाई देती है। जिस में चक्रवर्ती के माध्यम से बोगस अखबार के बोगस संपादकों पर व्यंग्य किया है तथा निःस्वार्थी देश सेवकों की समस्या दिखाई देती है, जो नसीम तथा किशोर के माध्यम से दिखाई देती है।

शर्माजीने अपने नाटकों में 'पारिवारिक समस्या' के अंतर्गत नारी संबंधी अनेक समस्याओं को प्रस्तुत करके उसका हल भी बताया है - असफल प्रेम की समस्या, प्रेम के खोकले आदर्श की समस्या, प्रेम विवाह

की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, अविवाह की समस्या, विधवा समस्या, अंधःविश्वास की समस्या, तथा दांपत्य प्रेम की समस्या आदि समस्याँओं का चित्रण किया हैं ।

इस समस्याओं को देखने के बाद हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि शर्माजी अपने नाटकों में इन समस्याओं को उजागर करने में सफल हो चुके हैं । उन्होंने मानवी जीवन के विविध धरातलनुसार विभिन्न समस्याएँ चुनकर अपने नाटकोंमें संपूर्ण सजगता के साथ प्रस्तुत करने में प्रभावशाली रूपमें सफल रहे हैं ।

सार रूप में हमकह सकते हैं कि शर्माजी ने ऐसे जीवन सत्य को अपने समाज और परिवेश से प्राप्त किया, जो किसी न किसी कोने से मानवीय हीत-अहित से जुड़ा हुआ हैं । उन्होंने अपने नाटकों की रचनाओं में जीवन के यथावत विस्तार के साथ ही संवेदनाओं को देखना अधिक पसंद किया हैं ।

संदर्भ सूची

1.	डा. गणपतिचंद्र गुप्त, साहित्यिक निबंध,	पृ. 394
2.	डा. ओमप्रकाश सारस्वत, बदलते मूल्य और आधुनिक हिंदी नाटक	पृ. 174
3.	डा. दिनेशचंद्र वर्मा, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक और समस्याएँ	पृ. 78-79
4.	डा. रेवतीसरन शर्मा, चिराग़ की लौ,	पृ. 84
5.	डा. रेवतीसरन शर्मा, न धर्म, न ईमान,	पृ. 21
6.	डा. दिनेशचंद्र वर्मा, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक समस्याएँ और समाधान,	पृ. 105
7.	वही, वही,	पृ. 65
8.	डा. रेवतीसरन शर्मा, चिराग़ की लौ,	पृ. 10
9	वही,	पृ. 28
10.	वही,	पृ. 43
11.	डा. नरेंद्रनाथ त्रिपाठी, हिंदी नाटक : बदलते आयाम ,	पृ. 50
12.	डा. रेवतीसरन शर्मा, चिराग़ की लौ,	पृ. 74-75
13.	लिना गौतम और सुरेश गौतम, नटशिल्पी डा.शंकर शेष	पृ.187
14.	डा. रेवतीशरण शर्मा, चिराग़ की लौं,	पृ.38

15. वही, पृ.39

16. वही, पृ.28

17. वही, पृ.30

18. वही, पृ. 57

19. वही, पृ. 34-35

20. डा. ओमप्रकाश सारस्वत, बदलते मूल्य और आधुनिकहिंदी नाटक पृ. 144

21. डा. शैल रस्तोगी, हिंदी उपन्यासों मे नारी पृ. 166

22. डा. रेवतीसरन शर्मा, न धर्म न ईमान , पृ. 33

23. डा. रेवतीसरन शर्मा, चिराग़ की लौ, पृ. 07 नाटक के बारे में

24. वही, पृ. 20

25. वही, वही, पृ. 32

26. डा. हेमराज कौशिक, अमृतलाल नागर के उपन्यास पृ. 77

27. डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर, हिंदी और मराठी सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 201

28. डा. रेवतीसरन शर्मा, न धर्म, न ईमान, पृ. 13

29. वही, वही, पृ. 17

30. वही, वही, पृ. 71

31. डा. कलावती प्रकाश, महासमरोत्तर हिंदी उपन्यासों में जीवनदर्शन, पृ. 19

32. राजेंद्र शर्मा, डा. स्वर्णलता गोडे,- हिंदी गद्य के निर्माता - बालकृष्ण भट्ट - उद्धृत- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमी, पृ. 18

33. डा. रमेश विवारी, हिंदी उपन्यास साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन , पृ. 123

34. गांधी संस्करण और विचार, गांधी शांति प्रतिष्ठान तथा सस्ता साहित्य मंडल का संयुक्त प्रकाशन, पृ. 355

35. डा. रेवतीसरन शर्मा, न धर्म, न ईमान, पृ. 25

36. वही, वही, पृ. 50-51

37. डा. रेवतीसरन शर्मा, अँधेरे का बेटा, पृ. 22

38. डा. गोपालकृष्ण अग्रवाल, भारतीय सामाजिक संस्थाएँ, पृ. 286

39. डा. जयश्री बरहटे, हिंदी उपन्यास : सांतवाँ दशक, पृ. 108

40. डा. रेवतीसरन शर्मा, अँधेरे का बेटा, पृ. 10

41. डा. रेवतीसरन शर्मा, न धर्म, न ईमान, पृ.16

42. वही, वही, पृ. 42

43. वही, वही, पृ. 56

44. डा. रेवतीसरन शर्मा, चिराग़ की लौ, पृ.86

45. डा. रेवतीसरन शर्मा, अँधेरे का बेटा, पृ. 74

46. डा. रेवतीसरन शर्मा, न धर्म, न ईमान, पृ. 78-79